मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी

(04 सितम्बर 1923- 20 जून 2018)

मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी समकालीन युग में उर्दू गद्य के सबसे प्रतिष्ठित हास्य-लेखक माने जाते हैं। उर्दू आलोचक डॉक्टर ज़हीर फ़तेहपुरी ने लिखा है " हम उर्दू हास्य के यूसुफ़ी-युग में जी रहे हैं।" उर्दू के हास्य-कवि सैयद ज़मीर जाफ़री ने उन्हें "उर्दू साहित्य का मुस्कराता हुआ दार्शनिक" और आलोचक मुहम्मद हसन ने "सतरंगे लम्हों का ताजदार" कहा है। उनकी रचनाओं के अंश साहित्यिक गोष्ठियों व निजी महफ़िलों में पढ़े जाते हैं। मित्रगण फ़ोन पर उनके वक्तव्यों का आदान-प्रदान करते हैं। उनके जुमलों को बार-बार दोहराकर कविता की मानिंद उनका आनंद लिया जाता। पाठकों के दिलों में अपने प्रति जितना प्रेम और सम्मान मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी ने पैदा किया है संभवतः किसी अन्य उर्दू हास्य लेखक ने नहीं किया। उन्हें पाकिस्तान के सबसे बड़े साहित्यिक सम्मानों, सितारा-ए-इम्तियाज़ (1999) और हिलाल-ए-इम्तियाज़ (2002) से सम्मानित किया जा चुका है। सन 2014 में पाकिस्तान जियो-न्यूज़ ने "बज़बान-ए-यूसुफ़ी" नामक एक धारावाहिक शुरू किया जिसमें यूसुफ़ी अपनी रचनाओं के अंश पढ़कर दर्शकों को सुनाते हैं। उनकी लोकप्रियता के कारण ही यह धारावाहिक बनाया गया क्योंकि साहित्य प्रेमी अपने प्रिय लेखक की रचनाओं को उनकी आवाज़ में सुनने के इच्छुक थे।

यूसुफ़ी की रचनाएँ

मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी की सबसे उत्कृष्ट रचनाएँ आब-ए-गुम (1990) और ज़र्गुज़श्त (1976) हैं। उनकी पहली दो रचनाएँ "चिराग़ तले" (1961) और "मेरे मुँह में ख़ाक" (1969) हैं। चिराग़ तले पहली रचना है। यह तेरह हास्य-निबंधों और रेखाचित्रों का संग्रह है जो 1961 में प्रकाशित हुआ। विषयवस्तु की दृष्टि से यह हल्की-फुल्की और साधारण रचना है। लेकिन कलात्मकता की दृष्टि से यह संग्रह उर्दू के हास्य साहित्य के क्षितिज पर एक नए सूर्य का उदय था। इसने अतिशीघ्र आलोचकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कराया। उस समय के उर्दू के प्रख्यात आलोचक मजनूँ गोरखपुरी चिराग़ तले और यूसुफ़ी की दूसरी पुस्तक मेरे मुँह में ख़ाक[1] (1969) के सन्दर्भ में लिखते हैं :

> "यूसुफ़ी की लेखनी जिस चीज़ को भी छूती है उसमें नई उपज और उठान पैदा कर देती है। उनका कोई वाक्य या वाक्यांश ऐसा नहीं होता जो पढ़ने वाले के विचार और दृष्टि को नई रोशनी न दे जाता हो। यूसुफ़ी एक हास्य-लेखक की हैसियत से एक नई पाठशाला हैं और उनके दोनों संग्रह हास्य-लेखन में एक नया अध्याय हैं। समकालीन हास्य-लेखकों को यूसुफ़ी की रचनाओं में उर्दू हास्य-लेखन के लिए नए शुभ-शगुन मिलेंगे। "

[1] "ख़ाकम बदहन" का अनुवाद --- कोई बड़ी या गुस्ताख़ीपूर्ण बात बोलने से पहले विनम्रता के तौर पर यह बोलते हैं।

दुष्ट

यह एक हास्य निबंध है जो मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी की पहली पुस्तक 'चिराग़-तले' के तेरह खटमिट्ठे निबंधों में शामिल है। यह मिर्ज़ा (अब्दुल वदूद बेग) का रेखाचित्र भी है। मिर्ज़ा कुछ दिनों सिगरेट पीते हैं, फिर छोड़ देते हैं फिर पीने लगते हैं और अपने सिगरेट पीने और छोड़ने के पक्ष में अद्भुत तर्क पेश करते हैं। भला क्यों न करें जबकि वे 'उल्टी दलीलों के बादशाह हैं'। दरअसल मिर्ज़ा अब्दुल वदूद बेग जिन्हें लेखक 'मिर्ज़ा' के नाम से उद्धृत करते हैं, यूसुफ़ी साहब के मित्र या हमज़ाद (छायापुरुष) के रूप में उनकी अक्सर रचनाओं में मौजूद होते हैं। ये अपनी उलटी-सीधी दलीलों और विचित्र विचारों के लिए जाने जाते हैं। यूसुफ़ी अपनी अकथनीय, उत्तेजक और गुस्ताख़ाना बातें मिर्ज़ा की ज़ुबान से कहलवाते हैं। ये किरदार हमें मुल्ला नसरुद्दीन की याद दिलाते हैं।

बात से बात निकालना, लेखनी के हाथों में खुद को सौंप कर मानो केले के छिलके पर फिसलते जाना, शेरों का उद्धरण, उनकी ओर संकेत या उनकी पैरोडी, और मज़ाक़ की फुलझड़ियों के बीच दार्शनिक संकेतों को छोड़ते जाना यूसुफ़ी साहब की रचना शैली का ख़ास रंग है। इस निबंध में भी यूसुफ़ी की रचना शैली की चमक हर क़दम पर उजाला किये हुए है और हम इसके प्रकाश में मानव मन की झलकियाँ देख सकते हैं।

क्रिकेट

यह हास्य निबंध भी 'चिराग़-तले' के निबंधों में शामिल है। इसके भी मुख्य पात्र मिर्ज़ा हैं, जिसमें मिर्ज़ा के क्रिकेट प्रेम और इस खेल के पक्ष में दूसरे खेलों के ख़िलाफ़ उनकी दलीलों से हँसी और व्यंग्य की फुलझड़ियाँ छोड़ी गई हैं। इस में भी यूसुफ़ी की रचना शैली का विशेष रंग आसानी से पहचाना जा सकता है।

लालायित कला[1]

'चिराग़-तले' के इस निबंध में ख़ानसामाँ मुलाज़िम रखने की दिक़्क़तों का ज़िक्र किया गया है। कहीं-कहीं 'मिर्ज़ा' का उल्लेख भी आया है। इस निबंध में भी यूसुफ़ी की अनुपम रचना शैली को आसानी से पहचाना जा सकता है।

---

[1] मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी की रचना शैली की एक विशेषता पैरोडी है। वे शेरों, कहावतों, मुहावरों, मिसरों और शब्दयुग्मों - की पैरोडी में बड़ा रस लेते हैं । इस निबंध का मूल शीर्षक "जूनूनए-ए-लतीफ़ा" है जो "फ़ुनून-ए-लतीफ़ा" (Fine Art) की पैरोडी है। यूसुफ़ी की उपर्युक्त पैरोडी की शैली पर "लालायित कला" "ललित कला" का अनुवाद है।

पड़िए गर बीमार

चिराग़ तले का यह निबंध तीमारदारों के प्रकार और उनसे मरीज़ को होने वाली असुविधाओं पर आधारित है।

सन

यह हास्य निबंध भी 'चिराग़-तले' में शामिल है। इसमें इतिहास के अध्ययन में तिथि को अत्यधिक महत्व देने और विद्यार्थियों द्वारा तिथियाँ याद रखने की तकलीफ़ों का ज़िक्र किया गया है। कहीं-कहीं 'मिर्ज़ा' का उल्लेख भी आया है।
इस निबंध में यूसुफ़ी की रचना शैली की एक झलक देखियेः
" ईस्वी सन से कहीं अधिक कठिन उन तिथियों का याद रखना है जिनके बाद में "ईसा पूर्व" आता है। इसलिए कि यहाँ इतिहासकार समय के पहिये को पीछे की ओर दौड़ाते हैं। इनको समझने और समझाने के लिए मानसिक शीर्षासन करना पड़ता है जो उतना ही कठिन है जितना उलटे पहाड़े सुनाना..... भोले-भाले बच्चों को जब यह बताया जाता है कि रोम की स्थापना 753 ईसा पूर्व में हुई तो वे नन्हे-मुन्ने हाथ उठाकर यह सवाल करते हैं कि उस समय के लोगों को कैसे पता चल गया है कि हज़रत ईसा मसीह के पैदा होने में अभी 753 साल बाक़ी हैं। उनकी समझ में यह भी नहीं आता कि 753 ई.पू. को सातवीं शताब्दी मानें या आठवीं।"

कॉफ़ी

'चिराग़-तले' में शामिल इस हास्य निबंध में लेखक ने कॉफ़ी से अपनी चिढ़ का ज़िक्र किया है और साथ-साथ यह भी दिखाया है कि कॉफ़ी पीने वाले इसे पीने की कैसे-कैसे तर्क बल्कि कुतर्क प्रस्तुत करते हैं । कॉफ़ी के साथ-साथ कुछ अन्य खाद्य व पेय पदार्थों पर भी अपनी राय व्यक्त की है।

चारपाई और कल्चर

'चिराग़-तले' में मौजूद इस हास्य निबंध में चारपाई और प्राच्य संस्कृति के सम्बन्ध का वर्णन हास्य शैली में किया गया है। इसमें चारपाई के प्रकार, इसके नानाविध प्रयोग, चारपाई के सांस्कृतिक प्रतीक, इससे निकलने वाली आवाज़ें, इनपर सोने के अनुभव आदि बातों का दिलचस्प वर्णन किया है। इस निबंध में यूसुफ़ी के प्रिय पात्र मिर्ज़ा का संक्षिप्त उल्लेख भी है।

और आना घर में मुर्ग़ियों का

'चिराग़-तले' के इस निबंध में लेखक ने मुर्ग़ियाँ पालने और इस प्रजाति की आदतों और स्वभाव का दिलचस्प वर्णन किया है। मुर्ग़ीपालन का मशवरा मिर्ज़ा का है। हालाँकि विषय साधारण है लेकिन पूरे निबंध में यूसुफ़ी की अनुपम रचना शैली की छटा बिखरी हुई है।

दस्त-ए-ज़ुलेख़ा (प्रस्त्वाना)

यह मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी की दूसरी पुस्तक *मेरे मुँह में ख़ाक* की प्रस्तावना है, जो नौ हास्य निबंधों और रेखाचित्रों का संग्रह है। इसमें यूसुफ़ी ने अपनी पुस्तक की प्रस्तावना स्वयं लिखने का औचित्य प्रदान किया है। वे लिखते हैं :

> "स्वयं प्रस्तावना लिखने में वही सुविधा और लाभ निहित हैं, जो आत्महत्या में होते हैं। यानी मृत्यु की तिथि, हत्या का हथियार और दुर्घटना-स्थल का चुनाव संबद्ध व्यक्ति स्वयं करता है। और पाकिस्तानी दंड संहिता में यह एकमात्र अपराध है, जिसकी सज़ा सिर्फ़ इस स्थिति में मिलती है कि मुल्ज़िम जुर्म अंजाम देने में कामयाब न हो।

प्रस्तावना की संभवतः सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें यूसुफ़ी ने हास्य और व्यंग्य के बारे में अपने विचार भी प्रकट किये हैं। इसमें रचना के शेष निबंधों की ओर संकेत हैं जिन्हें समझना पाठक के लिए शायद संभव न हो लेकिन ऐसे अंश बहुत कम हैं और उनमें भी अभिव्यक्ति के अनूठेपन का आनंद मिलेगा। इसलिए हमने प्रस्तावना को बिना परिवर्तन किये ज्यों का त्यों यहाँ पेश किया है।

प्रोफ़ेसर

यह एक रेखाचित्र है जिसके मुख्यपात्र प्रोफ़ेसर क़ाज़ी अब्दुल क़ुद्दूस एम.ए.बी.टी. गोल्डमेडलिस्ट हैं। यह रेखाचित्र मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी की दूसरी पुस्तक "ख़ाकम बदहन" (मेरे मुँह में ख़ाक) में शामिल है। इस में प्रोफ़ेसर के व्यक्तित्व की वक्रता और स्वभाव की सनक को विस्तारपूर्वक और बड़े रोचक ढंग से पेश किया गया है। प्रोफ़ेसर भी मिर्ज़ा की तरह यूसुफ़ी साहब के हमज़ाद (छायापुत्र) के रूप में "चिराग़ तले" के बाद की उनकी अक्सर रचनाओं में मौजूद हैं। ये भी अपनी उलटी-सीधी दलीलों और विचित्र विचारों के लिए जाने जाते हैं। यूसुफ़ी अपनी अकथनीय, उत्तेजक और गुस्ताख़ाना बातें मिर्ज़ा और प्रोफ़ेसर की ज़ुबान से कहलवाते हैं। ये किरदार हमें मुल्ला नसरुद्दीन की याद दिलाते हैं।

हिल-स्टेशन

यह हास्य शैली में लिखा हुआ एक यात्रा-वृत्तान्त है भी मुश्ताक़ अहमद यूसुफ़ी की दूसरी कृति "ख़ाकम बदहन" (मेरे मुँह में ख़ाक) में शामिल है। इसके मुख्यपात्र पात्र मिर्ज़ा, प्रोफ़ेसर और ज़िरग़ौस हैं जो लेखक के मित्र हैं। यह चार मित्रों की एक हिल स्टेशन की यात्रा का मज़ेदार वर्णन है और इन चारों मित्रों के रेखाचित्र भी मौजूद हैं।

अपने आप को माफ़ कर दिया कीजिए

यह यूसुफ़ी साहब द्वारा लिखा हुआ फैज़ अहमद फैज़ का बहुत संक्षिप्त लेकिन बेहद रोचक रेखाचित्र है। इसमें फैज़ अहमद फैज़ की अपने जीवन मूल्यों के प्रति वफ़ादारी और उनके व्यक्तित्व की विनम्रता और शर्मीलापन दिल को छू जाता है।